Indian J. Soc. & Pol. 08 (01) : 101-104 : 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 January 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

मुक्ता की कहानियों में नारी के विविध रूप

ज्योति ज्ञानेश्वरी[1]
[1]शोध छात्रा, विश्वविद्यालय कालेज, मंगलूर, कर्नाटक, भारत

ABSTRACT

सृष्टि के निर्माण और संचालन में नारी क महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नर और नारी सृष्टि के दो मूलभूत तत्व हैं। दोनो के सहयोग और समन्वय से ही सृष्टि की रचना होती है। नारी समस्त विश्व के मूल उद्‌भव में शक्ति का प्रतीक हैं इतनी महानता के के बाद भी नारी को समाज में वह स्थान नहीं मिला जिसकी वह अधिकारी है। नारी हमेशा दूसरे दर्जे की रही है। डॉ अंबेडकर ने लिखा है स्त्री दलितों में भी दलित है। अर्थ यह है कि जिस प्रकार दलितों के सारे अधिकार छीन लिए गये हैं तथा उनके लिए कर्तव्य ही शेष रहे थे, उसी प्रकार स्त्रियों के साथ भी इसी तरह का व्यवहार किया गया है। कर्तव्य निभाते निभाते नारी का जीवन घुटन बन गया। नारी का घुटन, दुख दर्द साहित्य का विषय बना। कई साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में नारी को स्थान दिया। हिन्दी कहानियों में कई दशकों से नारी का रूदन और हाहाकार गूंज रहा है। हिन्दी साहित्य जगत में कई ऐसे कहानीकार हैं जिन्होने नारी का दुख दर्द का चित्रण करके उसे न्याय दिलाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में ऐसे ही कहानीकार मुक्ता की कहानियों में नारी के विविध रूपों को देखने का प्रयास किया गया है।

KEYWORDS: *हिन्दी साहित्य, गद्य विधा, मुक्ता, कहानियां*

सृष्टि के निर्माण और संचालन में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नर और नारी सृष्टि के दो मूलभूत तत्व हैं। दोनो के सहयोग और समन्वय से ही सृष्टि की रचना होती है। नारी समस्त विश्व के मूल उद्‌भव में शक्ति का प्रतीक हैं इतनी महानता के बाद भी नारी को समाज में वह स्थान नहीं मिला जिसकी वह अधिकारी है। नारी हमेशा दूसरे दर्जे की रही है। डॉ अंबेडकर ने लिखा है स्त्री दलितों में भी दलित है। अर्थ यह है कि जिस प्रकार दलितों के सारे अधिकार छीन लिए गये हैं तथा उनके लिए कर्तव्य ही शेष रहे थे, उसी प्रकार स्त्रियों के साथ भी इसी तरह का व्यवहार किया गया है। कर्तव्य निभाते निभाते नारी का जीवन घुटन बन गया। नारी का घुटन, दुख दर्द साहित्य का विषय बना। कई साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में नारी को स्थान दिया। हिन्दी कहानियों में कई दशकों से नारी का रूदन और हाहाकार गूंज रहा है। हिन्दी साहित्य जगत में कई ऐसे कहानीकार हैं जिन्होने नारी का दुख दर्द का चित्रण करके उसे न्याय दिलाने का प्रयास किया है।

महादेबी वर्मा जी का कहना है ''पुरूष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है परंतु अधिक सत्य नहीं, विकृति के अधिक निकट पहुंच सकता है परंतु यथार्थ के अधिक समीप नहीं । पुरूष के लिए नारीत्व कल्पना है, परंतु नारी के लिए अनुभव। अपने जीवन का जैसा सजीव सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी वैसा पुरूष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके।'' (वोडिक,2009 पृ010) अर्थात पुरूषों द्वारा नारी मन की गहराहियों तक पहुच पाना स्वाभाविक है लेकिन नारी जीवन का यथार्थ चित्राण नारी ही कर सकती है। आज अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य में नारी के जन्म से लेकर मृत्यु तक के मुद्‌दों पर विचार विमर्श किया है । ऐसे अनेक कहानीकारों में मुक्ता जी भी एक हैं।

बिन व्याही मां

विना शादी के बच्चे को जन्म देना भारतीय समाज में काफी दुस्साहस से भरा काम माना जाता है। एकल अभिभावक बनकर बच्चे का पालन पोषण करना बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। ऐसी कठिन डगर पर चलकर मां और पिता की दोहरी भूमिकाओं को निभाना आसान नहीं है। आजकल बिन ब्याही माताओं की संख्या बढ़ती जा रही है। प्रेम पाश में अटकी हुई लड़कियां अपने प्रेमी पुरूष के शारीरिक संबंध का शिकार होकर विबाह किये बिना मां बन जाती हैं।

मुक्ता जी की कहानी 'एक पहचान का जन्म' में शेफाली मजूमदार, पार्थ घोष नामक विवाहित पुरूष से प्यार करती है। उससे शारीिक संबंध रखने से वह मां बन जाती है। एक स्त्री जब भी सच्चा प्यार करती है तो वह निःस्वार्थ होता है। उसकी अपेक्षाये कम होती हैं कई कारणों से वह सच्चे प्रेम की तलाश में रहती है। और जैसे ही उसे कहीं प्राप्त हो जाता है तो बिना सोचे समझे अपने आप को समर्पित कर देती है। इसी का परिणाम शेफाली जैसी लड़कियों को भुगतना पड़ता है। शेफाली अपनी कहानी अपनी बहन से बताती है। शेफाली की बहन और पार्थ घोष के विवाह की बात करती है तब शेफाली दृढ़ स्वर में बोलती है– '' दूसरा विवाह तो मात्र एक औपचारिकता ही है। मैंने इसकी आवश्यकता नहीं समझी। पार्थ अभी भी तैयार है हम दोनो की जिम्मेदारी उठाने को , लेकिन मैं बबलू को आपना नाम दूंगी । मैंने पार्थ से कुछ लिया नहीं शिवाय प्रेम के।''(मुक्ता,2015पृ011)

मानव को संवेदनशीलता के साथ साथ व्यवहारिक भी होना चाहिए । अन्यथा यह उनकी मूर्खता का ही लक्षण होगा। शेफाली, जैसी लड़कियां अक्सर प्रेम के नाम पर बलि चढ़ जाती हैं।

1: Corresponding Author

नौकरी पेशा नारी

आज पुरूषों के साथ महिलायें भी अर्थार्जन कर रही हैं। आज नारी सरकारी, अर्धसरकारी, और गैर सरकारी कंपनियों में नौकरी कर रहीं है आज मंत्रालय, प्रयोगशाला, शोध संस्थान, रेडियों, टी0बी0 प्रचार प्रसार हर जगह पर नारी ने आपने पैर जमायें हैं। घर परिवार को संभालने वाली नारी ने अर्थार्जन करना प्रारंभ किया । आर्थिक स्वावलंबी नारी में आत्मविश्वास बढ़ा है । वह स्वाभिमानी और सशक्त बनी है। लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने के लिए नारी को बहुत संघर्ष करना पड़ा है। मुक्ता जी ने अपनी कहानियों में नौकरी पेशा नारी के संघर्ष का चित्रण किया है।

'जनम दःख' कहानी की मुनिया निम्न वर्ग की लड़की थी । उसके पिता स्कूल में झाड़ू देने और टाटपट्टी साफ करने का काम करते थे। मुनियां ने अपनी जिद से पढ़ना शुरू किया और खुद को सुशिक्षित बनाया। वह मिडवाइफ बन गई। लेखिका मुनिया की दशा का वर्णन इस तरह करती है –

''जूठे बर्तनों के ढेरे में भिनभिनाती मक्खियों के बीच लार टपकाती मुनियां, सुरंगा जैसे खाली ऐंठते पेट के सामने कुल्लड़ में परसा चावल देखते ही चू पड़ने वाली मुनिया, बड़कन ठाकुर ब्राह्मण लोगों के कुए से आधा लोटा पानी चुराने के जुर्म में लहूलुहान अधमरी मुनियां''(वही,पृ0124)

इस कथन में लेखिका ने एक निम्न वर्ग की गरीब लड़की का चित्रण किया है। जिसने कड़ा मेंहनत से पढ़ाई करके नौकरी हासिंल की है।

'मिस साहिब' कहानी में रूचि की मां एक स्कूल में शिक्षिका का काम करती है। पति और ससुरालवालों के जुल्म से तंग आकर वह रूचि को लेकर अलग हो गयी थी।

रूचि अपनी बीती हुई जिन्दगी के बारे में सोचती है–

''मम्मी का आकर्षक और रोबीला व्यक्तित्व और उसके पीछे स्त्री शोषण का पूरा इतिहास। रोती हुई मम्मी, सुबह से ही काम में जुटी हुई मम्मी, रूचि को स्कूल में छोड़कर बी0एड0 की पढ़ाई करती हुई फिरभी अपना अधिकार पाने की नाकाम कोशिश करती हुई मम्मी।''(मुक्ता,1996 पृ075)

संघर्ष नारी की नियति बन गयी है। उसने बिना संघर्ष के आज तक कुछ हासिल नहीं किया । लेखिका ने 'जनम दुःख' और 'मिस साहिबा' कहानी में आर्थिक रूप से स्वनिर्भर बनने के लिए संधर्ष करने वाली नारी का चित्रण किया है। नौकरी करने वाली नारी ने पुरूषों की भांति बाहर नौकरी स्वीकार कर अपने दुगने दायित्व को निभाया है। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ा और स्वतंत्र रूप से जीने लगी। घर की चहारदीवारी से मुक्त होकर वह जीवन को अपनी दृष्टि से देखने में समर्थ हुई । यदि वह घर की चौखट से बाहर न आती तो वह अपनी आंखों की बजाय दूसरे की आंखों से दुनियां देखती और उसे ही सही समझती।

रूढ़ि परंपरा का विरोध करने वाली नारी

भारतीय नारी मरते दम तक शोषण को सहती रहती है। रूढ़ि परंपरा के नाम पर उसका शोषण किया जाता था। दसअसल महिलाएं ही परंपराओं का निर्वाह करती हैं। उसका एकमात्र कारण है कि समाज ने औरत को अकेला, बेवस, गैर जिम्मेदार और अछूत बना दिया था। रूढ़ि परंपराओं के कारण उसका शोषण होता था। जब से नारी ने स्वतंत्र रूप से जीना शुरू किया उन परंपराओं का विरोध करना शुरू किया जिससे वह शोषित थी।

'गंगा पुजाइये' कहानी की उर्मिला अपने विधवा बहू संगीता को सफेद धोती पहनने से इनकार करती है। वह चाहती है कि बहू श्रृंगार करे । संगीता की इच्छानुसार उर्मिला उसकी दूसरी शादी को भी तैयार है । उर्मिला का पति नंदकिशोर कहते हैं–

''आज कह रही हो संगीता नौकरी कर ले, कल को कहना दूसरा व्याह कर ले''

उर्मिला प्रतिवाद करती है–

''इसमें बुराई ही क्या है? अभी उसकी उम्र ही क्या है? कोई अच्छा लड़का देखकर मैं खुद उसका ब्याह करूंगी।''(मुक्ता,2015,पृ043)

भारतीय समाज में विधवा होते ही नारी को अलग नजर से देखा जाता है। उसे न सजने का अधिकार है और यहां तक कि उसके परिवारवाले ही उसे काशी बृन्दावन जैसे नगरों में अनाथ छोड़ आते है। मुक्ता जी ने उर्मिला के चरित्र में ऐसी नारी का चित्रण किया है जो रूढ़ि परंपराओं के बंधन से बंधी विधवा नारी को सम्मान देती है।

हमारी औरतें मरते दम तक मुंह सिंये रहतीं हैं। जबकि पश्चिमी देशों में नारी अपने पति के खिलाफ मोर्चाबंदी करती है । वहां पति सहयोगी है पर हमारे यहां देवता है। देवताओं से लड़ा नहीं जा सकता अर्थात भारतीय नारी जब तक पति को परमेश्वर मानती रहेगी तब तक पति द्वारा होने वाले शोषण से वह त्रस्त रहेगी। आज भी हमारे समाज में बहुतेरी महिलायें ऐसी हैं जो पति परमेश्वर द्वारा किये गये हर जुल्म को अपनी नियति मानकर सहती हैं। लेकिन कुछ महिलायें ऐसी हैं जो शोषण का विरोध करती हैं । पति से अलग होकर स्वतंत्र जीवन बिताती है।। 'मिथक नहीं हैं औरतें' कहानी की तारा अपने पति मकरंद के नाजायज संबंध से तंग होकर अलग रहती है। मकान मालकिन के प्रश्नों से बचने कि लिए वह पति के तस्बीर के सामने अगरबत्ती जलाती है।

नारी अपने लिए कम और दूसरों के लिए ज्यादा जीती है तभी स्त्री हमेशा अपना मन मारकर अंदर ही अंदर घुटती रहती है।

आत्म रक्षा करने वाली नारी

आज शासन के विभिन्न स्तरों पर महिलायें पदासीन है। हमारे देश में दुनियां की सर्वाधिक निर्वाचित महिला प्रतिनिधि हैं, जिस देश की प्रधानमंत्री महिला थी, रक्षा मत्री महिला थी, यहां तक कि राष्टपति भी महिला थी उस देश में लड़कियों और

महिलाओं पर होने वाले भयानक अत्याचारों की कहानियां सुनने को मिलती है। कहा गया था कि शिक्षा से नारी की समस्याये मिट जायेंगी। सुशिक्षित आर्थिक रूप से सशक्त नारी पर जुल्म नहीं होगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ। नारी चाहें सुशिक्षित हो या आत्म निर्भर, कभी कभी उसे भी अन्याय, अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। इसका मुख्य कारण है कि उसमें आत्म विश्वास की कमी। आत्म विश्वासी नारी ऐसी स्थिति में अपनी शक्ति या युक्ति का प्रयोग करके बच जाती है। 'कुसुम कथा' और 'आंच'कहानी में शक्ति और युक्ति का प्रयोग कर स्वयं रक्षा करने वाली नारी का चित्रण है। 'कुसुम कथा' कहानी में कुसुम का पति सुनीता से दूसरा विबाह करके शहर में बस जाता है। कुसुम का जेठ कुसुम पर अत्याचार करने की कोशिश करता है। लेखिका कहती है–

''उस दिन भी ऐसी ही ठंढी रात थी। आधी रात को किवाड़ खटकने पर कुसुम ने जैसे ही दरवाजा खोला, जेठ लगभग ढकेलते हुए कुसुम पर झपटे। कुसुम ने लपककर जमीन पर पड़ा हंसिया उठा लिया। रणचंडी बनी कुसुम का रूप देख वे भयभीत हो उठे, पसीने में तर कांपते हुए बाहर निकल गये।''(मुक्ता,1994,पृ047)

उपरोक्त कथन में मुक्ता जी ने यह स्पष्ट बताया है कि सशक्त नारी का शोषण नहीं किया जा सकता है। कुसुम के चरित्र द्वारा सशक्त एवम् स्व रक्षा करने वाली नारी का चित्रण है।

'आंच' कहानी की सुमन विधवा है। बीघा भर जमीन में सब्जी उगाकर उसे बेचकर अपना जीवन बिताती है। गांव का पण्डित और ठेकेदार उसका बलात्कार करने की कोशिश करते हैं तो उन पर लाल मिर्ची का बुक्का फेंककर वह अपनी रक्षा करती है। लेखिका कहती है–

''लाल मिर्ची देखते ही आंखें चमकने लगीं । संकल्प ने जन्म लिया वह शक्ति से भर उठी, कटोरी में मिर्ची बुक्का लिये आगे बढ़ी, उसके चेहरे पर तीक्ष्ण मुस्कान फैली । काली कृपाण लिये आगे बढ़ी।''(मुक्ता,2010,पृ055)

नारी की भूमिका में बदलाव को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। अपनी इच्छाशक्ति के बल पर वह सफल हुई । फिरभी वह जुल्म का शिकार बन रही है। जब तक नारी पुरूषों की मदद से जीवन बिताती रहेगी तब तक उसका शोषण होता ही रहेगा। इसलिए नारी को अपने उपर होने वाले बलात्कार जैसे घिनौने हरकत से बचने के लिए स्वरक्षा के तरीकों को अपनाना है। ऊपर की दोनो कहानियों में नारी पात्र एक सामान्य नारी है जिन्होने आत्मविश्वास से आपनी स्वरक्षा की है।

नारी के अस्तित्व की लड़ाई

नारी आज शिक्षित हुई है। इसी के परिणामस्वरूप उसमें अब अस्तित्व और अधिकारों के प्रति जागृति आयी है। आज की स्त्री अपनी स्मिता और अस्तित्व की वास्तविकता को पहचान रही हैं । आज वह पुराने मिथकों, आदर्शों को तर्क के तराजू पर तौलती है । नई परिस्थितियों ने उसे नए उत्तरदायित्व दिये है। आज नारी अपने अस्तित्व की लड़ाई खुद लड़ रही है। 'एक पहचान का जन्म' कहानी की शेफाली शशांक से प्यार करती है । शशांक उसे धोखा देता है। शेफाली उससे दुखी और अपमानित होती है वह अपनी बहन से कहती है–

''आज प्रिया शेफाली अंगारों पर वस्त्रहीन बैठा दी गयी है। सनातनयुगीन मनु शशांक बनकर फिर उसका तिरस्कार कर रहा है । लेकिन दीदी मैं कोई अहिल्या नहीं हूं जो किसी राम की प्रतीक्षा केवल शापमुक्त होने के लिए करूंगी। मैं किवाड़ों को खोलने में विश्वास रखती हूं। बंद द्वार स्वयं नहीं खुलते उन्हे खोलने के लिए मजबूत हाथों की जरूरत होती है।''(मुक्ता,2015,पृ09)

शेफाली गांव छोड़ कलकत्ता जाती है। वह पार्थ घोष नामक विवाहित पुरूष से संबंध रखती है। शेफाली और पार्थ घोष का बेटा है बबलू। शेफाली और उसके बहन के बीच बबलू के भविष्य की बात आती है। तब शेफाली अपनी बन से कहती है–

''जीवन एक चुनौती है यहां अपनी अस्मिता खुद साबित करनी पड़ती है। मैं तो केवल कोशिश कर रही हूं। ''(वही पृ011)

उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट है कि नारी अपनी अस्मिता को मूल्य देने के लिए पुरूष शासित समाज को टक्कर दे रही है। अतः नारी संबंधी सामाजिक नजरिये में बदलाव और स्वयं नारियों के भीतर जागरूकता से नारी ने अपने अस्तित्व के लिए लड़ना आरंभ किया है। महाभारत में भी कुन्ती, गांधारी, और द्रौपदी जैसी महिलायें हैं जिन्होन समाज की बनी बनाई लीक पर चलने से इन्कार किया है। नारी अपने अधिकारों के लिए जागरूक हुई है। सरोजनी नायडू का कहना है –

''जब भी समाज में अज्याचार होता है आत्मसम्मान इसी में है कि उठो और कहो कि यह अत्याचार आज ही खत्म करना होगा। क्योंकि न्याय पाना मेरा हक है।''

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि मुक्ताजी एक ऐसी सशक्त लेखिका हैं जिन्होने अपने लेखन से समाज की सोच को बदलने का प्रयास किया। नारी के प्रति समाज के रवैये को एक स्वतंत्र मोड़ दिया जहां वह अकेली खड़ी रह कर भी समाज के पुरूष सत्तात्मक सोच का प्रतिरोध कर सके तथा अपने लिए एक नये रास्ते का आविष्कार कर सके। जहां उसका अस्तित्व और आत्म सम्मान दोनो को वह सुरक्षित पायेगी। नारी के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह अपनी हीनता ग्रंथि और दोयम दर्जे की मानसिकता से बाहर आये। अपनी एक नयी पहचान बनायेजिससे समाज का नारी के प्रति सोच बदले। आखिर नारी भी तो एक इन्सान है। यही मुक्ता जी का अहम संदेश है।

REFERENCES

बोडके, डॉ0 बबन राव, (2009) *बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में* नारी विकास प्रकाशन

मुक्ता, (2015) *चुनी हुई कहानियां,* कानपुर, अमन प्रकाशन

.....(1996) *पलाश वन के घुंघुरू,* दिल्ली, अभिरूचि प्रकाशन

.....,(1994) *इस घर उस घर*, दिल्ली, पूर्वांचल प्रकाशन

..... (2010) *सीढ़ियों का बाजार* नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ